International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 2, Mar.-Apr, 2024, Impact Factor: 8.376

‘हैरी कब आएगा?’, नया ब्राह्मण’, ‘धोखा’, और ‘ब्रह्मराक्षस’ कहानी संग्रहों की सारगर्भिता

सीमा

शोधार्थी, भारतीय भाषा विभाग, दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार

भारत में विभिन्न जाति समुदाय के लोग निवास करते हैं। यह कृषि प्रधान देश होने के साथ–साथ जाति प्रधान देश भी है, जहाँ मनुष्य को उसकी पद – प्रतिष्ठा से नहीं बल्कि जाति से पहचाना जाता है। भारत में जाति सर्वश्रेष्ठ है। सवर्णों में तो दलित होते ही थे लेकिन कुछ जातियाँ दलितों में भी दलित जैसा जीवन जीने को मजबूर हैं। मनुष्य अपने आप को एक – दूसरे से श्रेष्ठ समझने की होड़ में इंसानियत को भूलता जा रहा है कि मनुष्य – मनुष्य सब एक समान होते हैं। सूरजपाल चौहान एक दलित साहित्यकार हुए हैं, जिन्होंने दलित समाज की समस्याओं को समाज के सामने लाकर उनके समाधान की चर्चा भी की है उन्होंने दलित समाज की समस्याओं जैसे – वर्ण – व्यवस्था, छुआछूत, दलित स्त्रियों पर अत्याचार, जातिवाद की समस्या आदि पर अपनी लेखनी चलाई है। सूरजपाल चौहान की रचनाएं जीवन में आस – पास की घटना हैं। पाठक को पढ़ने पर ऐसा प्रतीत होता है कि यह घटनाएं उसके आस – पास घटी हुई घटना हैं। पाठक को संघर्ष एवं चेतना की ओर प्रेरित करती हैं। इनमें कुछ महत्वपूर्ण रचनाएं हैं जो पाठक पर गहरा असर छोड़ती हैं।

लेखक सूरजपाल चौहान के चार कहानी – संग्रह प्रकाशित हुए हैं। ‘हैरी कब आएगा’, ‘धोखा’, ‘नया ब्राह्मण’,‘ब्रह्मराक्षस’, सूरजपाल चौहान की रचनाओं का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनकी रचनाएं व्यवस्था – परिवर्तन, सामाजिक न्याय, यथार्थ, लौकिक और वैज्ञानिक प्रतिमानों को सँजोए,सवर्ण मानसिकता,कथनी – करनी में अंतर, अत्याचार, अन्याय, पाखंड, षड्यंत्र जैसी समस्याओं को समाज के सामने उजागर किया है। ‘हैरी कब आएगा’ सूरजपाल चौहान का प्रथम कहानी – संग्रह है।इस कहानी – संग्रह के बारे में जयप्रकाश कर्दम कहते हैं –“इस संग्रह की कहानियां उन लोगों की यात्रा संघर्ष और जिजीविषा की कहानियां हैं जो स्वर्ण सामंतों द्वारा बार–

बार और विभिन्न प्रकार से उत्पीड़ित उपेक्षित किए जाने के बावजूद मानवीयता और अन्याय के समक्ष झुकते नहीं निरंतर संघर्ष करते हैं।"[1]'परिवर्तन की बात' कहानी में नायक किसना और उसके सहयोगियों के माध्यम से समाज में आई जागृति को दर्शाया गया है। सवर्ण लोगों के मरे पशुओं को उठाने का काम सदियों से दलित समाज ही करता आया है लेकिन अब दलित समाज में परिवर्तन का स्वर मुखर है वह सदियों से चली आ रही इस परंपरा में परिवर्तन करना चाहता है। किसना निडर होकर ठाकुर की बातें सुने जा रहा था उसने ठाकुर की ओर देखा और गला खँखारते हुए बोला–"ठाकुर मैंने मरे जानवर उठाना बंद कर दिया है।"[2]

"तुम्हीं तो मरे जानवर उठाने का काम करके आए हो। तुम नहीं करोगे तो कौन करेगा इस काम को?"[3] ठाकुर हरप्रसाद ने बीच में बोला।

"कोई भी करे, अब हम नहीं करेंगे।"[4]किसना ने कहा। इस कहानी के माध्यम से किसना ने सदियों से चली आ रही परंपरा को तोड़ने का साहस दिखाया है। इस काम को करना दलित लोग अपनी नियति समझते थे उसमें बदलाव लाने के लिए सवर्णों के खिलाफ आवाज उठाई गई है। धीरे–धीरे दलित समाज अपने पुश्तैनी धंधे को छोड़कर व्यवसाय के अन्य कार्यों को अपनाने लगा है। यह एक गर्व करने की बात है। धीरे – धीरे ही सही लेकिन परिवर्तन हो रहा है। ऐसे ही 'साजिश' कहानी जिसमें समाज के लोगों की मानसिकता दलितों को उनके पुश्तैनी धंधे में लगाए रखने की बनी रहती है। उनकी मानसिकता है कि सदियों से परंपरागत कार्य करता आ रहा दलित समाज आज भी उसी में उलझा रहे अगर दलित समाज दूसरे व्यवसाय में लग जाएगा तो यह कार्य कौन करेगा?'साजिश' कहानी का नायक नत्थूबैंक मैनेजर की बातों के जान में उलझ चुका था।नत्थू को तनिक भी सोचने का अवसर नहीं मिला।नत्थूने एक बार साहस बटोर कर उससे कहा–"सर, मैं इस कार्य हेतु कर्जा नहीं लेना चाहता। मैं कोई अन्य कार्य कर लूंगा, लेकिन सूअर पालने का काम नहीं करूंगा।"[5]

शान्ता ने टोकते हुए कहा–"बस कीजिए मैनेजर साहब। अपनी भलाई की बात अब हम खुद सोच लेंगे। आप कष्ट मत कीजिए। सदियों से आप सोचते रहे हैं हमारे लिए। अब आप आराम कीजिए। अपना नफा नुकसान हम खुद समझेंगे। गलती करके ही लोग सीखते हैं। हमें गुमराह मत कीजिए। आप अपने बेटे को पिगरी का लोन देकर प्रशिक्षित करें, तो अच्छा रहेगा। पिछले हफ्ते आपने क्या कहा था और अभी कैसे बात कर रहे हैं गिरगिट की तरह रंग बदलना तो कोई आप लोगों से सीखे।"[6] इस कहानी में लेखक ने हिंदू मानसिकता की साजिश को उजागर किया है जो दलित समाज को पुश्तैनी पेशों में फंसाए रखना चाहते हैं। इस कहानी कीशान्ता ने

समझदारी का परिचय दिया है। उसने बताया है कि दलित समाज अब जान गया है वह अच्छे – बुरे में भेद करते हुए सवर्णो द्वारा चली हुई चाल को समझने लगा है।'हैरी कब आएगा'? कहानी हिंदू मानसिकता के ओछेपन को उजागर करती है दलित समाज के लोग कितने भी पढ़े–लिखे क्यों ना हो उनकी पहचान जाति द्वारा ही की जाएगी। हैरी जो मोनिका से विवाह करना चाहता है वह उसके लिए मर मिटने के लिए उतारू हो जाता है, लेकिन जैसे ही जाति का पता चलता है उसका व्यवहार एकदम बदल जाता है इसके बाद वह कभी विश्वविद्यालय में नहीं आता।

"नहीं यार, प्रॉब्लम वाकई बहुत बड़ी है।"[7] संजय ने कहा।
"क्या वो किसी और से.....।" हैरी ने पूछा।
"नहीं यार, ऐसा कुछ नहीं है.... बस....।" संजय ने हैरी को टोका।
"बस क्या....?"
"वोएस. सी. है।"[8]

'नया ब्राह्मण' कहानी – संग्रह की 'नया ब्राह्मण' कहानी एक ऐसे दलित की कहानी है जो बाबा साहेब द्वारा दिलाए आरक्षण से नौकरी पाता है लेकिन नौकरी मिलते ही वह सब भूल जाता है और उनका अपमान करता है। जगमेर ने मंगलू को गले लगाते हुए कहा था – "भैया खूब तरक्की पर बढ़तौ जा, बाबा साहेब का तोपे आशीर्वाद बनो रहे।उसने बड़ी बे – अदबी से कहा – "मैं तो यहां तक अपनी मेहनत से पहुंचा हूं, बाबा साहेब आसमान से उतर कर मुझे नौकरी देने नहीं आए, अरे कैसा बाबा, काहे का बाबा।"[9]

कैसी विडंबना है कि दलित भी बाबा साहेब के द्वारा किए गए एहसानों को नकार रहा है। अगर बाबा साहब नहीं होते तो दलित समाज आज भी सवर्णों के घर की जूठन खा रहा होता। इस कहानी – संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता अपनी ही जाति समुदाय और समाज के प्रति एक तीखी आलोचनात्मक दृष्टि सूरजपाल चौहान की कहानियों को दूसरे दलित कहानीकारों से अलग करती है।'धोखा' कहानी – संग्रह की 'एकता का ढोल' कहानीदलितों में भी दलित होने की मानसिकता को दर्शाता है।सवर्णों में तो दलित थे ही लेकिन दलित समाज भी विभिन्न उपजातियों में बंटा हुआ है।यहाँ लोग जाति के नाम पर एक – दूसरे से अपने आप को श्रेष्ठ साबित करने में लगे हैं। आज भी दलित जातियों में आपस में रोटी – बेटी का संबंध नहीं बन पाया है।

लोग आपस में एक दूसरे को हीन दृष्टि से देखते हैं। बिटिया को जब मैंने इस विषय को विस्तार से समझाया तो मेरी बात सुनकर उसके मुँह से इतना ही निकला – "ऐसी बात है तो फिर पढ़े–लिखे दलित एकता का ढोल क्यों पीटने में लगे हैं।"[10]सूरजपाल चौहान अपनी बेटी का विवाह दलित समाज की किसी भी जाति में करने के लिए हमेशा तत्पर रहे लेकिन लोगों की मानसिकता तो यही थी कि यह भंगी समाज से हैं और इन्हें अपनी बेटी का विवाह अपनी ही जाति में करना चाहिए। बड़े–बड़े कवि लेखक लंबे – लंबे भाषणों में बड़ी–बड़ी बातें करते हुए समानता की बात करते हैं, एकता का ढोल पीटते हैं लेकिन सच्चाई कुछ और ही होती है उनके लिए यह सब कहने की बातें होती हैं अंदर की बातें कुछ और ही होती हैं।'छू नहीं सकता' कहानी सवर्णों की सदियों से चली आ रही मानसिकता की कहानी है जिसमें वे दलितों को अछूत मानते हैं, उन्हें किसी भी वस्तु को छूने की इजाजत नहीं देते।

"भीमा, क्या तुम इस सवाल का कोई और उत्तर देना चाहते हो?"[11] जी सर, वह क्लास रूम के एक कोने में पीने के पानी से भरा मटका, जिसे मैं देख सकता हूँ किंतु छू नहीं सकता। बच्चे ने खड़े होकर अदब के साथ कहा था। बच्चे की बात सुनकर पहले तो मास्टर सकपकाया,फिर नाक – भौंह सिकोड़ते हुए बोला – अच्छा – अच्छा, ठीक है...., चल अब बैठ जा।"[12] इस कहानी में स्कूल अध्यापक की भी यही सोच है जो दूसरे लोगों की होती है। अध्यापक का काम अच्छी शिक्षा देना है और शिक्षा भेदभाव से कोसों दूर होती है, लेकिन ऐसे लोगों को जहां भी मौका मिलता है यह मौका छोड़ते नहीं है। भारत को आजाद हुए काफी साल हो गए। हम अंग्रेजों से तो आजाद हो गए लेकिन सवर्णों से दलित अब तक आजाद नहीं हो पाए हैं। आए दिन अखबारों में पढ़ते हैं, सुनते हैं। राजस्थान के जालौर की घटना अभी की है जिसमें एक बच्चे को स्कूल में इसलिए मारा पीटा गया कि उसने एकसवर्ण अध्यापक की मटकी से पानी पी लिया जिसे इतना मारा गया कि उसकी मृत्यु हो गई, लेकिन लोग कहते हैं कि कहां है छुआछूत? लेकिन ऐसी घटनाएं दिन– प्रति – दिन किसी न किसी स्थान पर अवश्य घटित होती हैं। लेखक सूरजपाल चौहान की रचनाएं जीवन से प्राप्त अनुभवों की घटनाएं हैं।

'ब्रह्मराक्षस' कहानी – संग्रह में 'हिस्से की अस्थियां' एक पढ़े – लिखे दलित रामप्रकाश और उसके अनपढ़ छोटे भाई दिनू की है। रामप्रकाश पढ़–लिखकर नौकरी पा लेता है और अपने परिवार के प्रति जिम्मेदारी को भूल जाता है वह अपने माता–पिता और भाई से अलग हो जाता है। वह बीमार पिता की भी सुध नहीं लेता। दिनूने उसे याद दिलाते हुए कहा–

"भइया, बाबा साहेब ने सच ही कहा था कि उन्हें समाज के पढ़े–लिखे लोगों ने धोखा दिया है।"[13] दलित समाज के लोग पढ़ लिखकर नौकरी तो पा लेते हैं लेकिन वह अपने ही परिवार से कटकर रहने लगते हैं। अपनी जिम्मेदारियों को भूल जाते हैं लेखक कहते हैं कि पढ़ – लिख जाने के बाद दलित समाज के लोगों का कर्तव्य बनता है कि वह अपने पिछड़े भाइयों को आगे लाएं वह नहीं लाएंगे तो कौन लाएगा।'ब्रह्मराक्षस' कहानी जिसके नाम पर संग्रह का शीर्षक भी है इस कहानी में बताया गया है कि जाति नाम का ब्रह्मराक्षस भारत देश में जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारे साथ रहता है हम कहीं भी जाएं कितने भी बड़े पद पर प्रतिष्ठित हो लेकिन यह हमेशा पीछा करता रहेगा। 'ऊंच–नीच','तीन किस्से', 'और वह जाग गयी','बीस साल बाद भी', 'पंद्रह वर्षों के बाद भी', आदि कहानियां भी दलित समस्याओं को उजागर करती हैं।

लेखक सूरजपाल चौहान की कहानियां समस्याओं को उजागर करने के साथ–साथ समाधान भी सूझाती हैं। दलित समाज की स्थिति का केवल सवर्ण समाज ही जिम्मेदार नहीं है बल्कि वे स्वयं भी निठल्ले हो गए हैं और आरोप सारा सवर्ण समाज के ऊपर लगाते हैं।'पंद्रह वर्षों के बाद भी' कहानी में वाल्मीकि जाति का सुरेंद्र जो पंद्रह सालों से स्कूल में झाड़ू लगाने का काम करता है। प्रिंसिपल ने कई बार उसे एप्लीकेशन लिखने को कहा कि वह एप्लीकेशन लिख कर दे दे वह उसका प्रमोशन करवा देगी लेकिन वह उसी कार्य मैं खुश है। वह प्रमोशन नहीं चाहता। वह पूरा दिन रहकर कार्य नहीं करना चाहता।सूरजपाल चौहान की रचनाएं में ब्रज और खड़ी बोली का मिश्रण मिलता है। दोनों बोलियो के शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियां पढ़ने को मिलती हैं। सूरजपाल चौहान ने सवर्ण समाज एवं दलित समाज के लोगों पर रचनाओं के माध्यम से करारा व्यंग्य किया है। वे जितने सवर्णों के प्रति निर्मम हैं, उतने ही दलितों के प्रति भी हैं। सच्चाई कहते हुए बिल्कुल नहीं हिचकते। वे स्पष्ट रूप से अपनी बात कहने वाले दलित लेखक हैं। सूरजपाल चौहान की रचनाएं पाठक पर गहरा असर छोड़ती हैं रचनाओं को पढ़ते हुए पाठक में नई चेतना और संघर्ष के प्रति रुझान होता है।

लेखक कहते हैं अगर दलित समाज में बदलाव लाना है तो सबसे पहले शिक्षा ग्रहण करनी होगी शिक्षा के माध्यम से ही समाज के दूसरे लोगों को जागरूक कर पाएंगे। लेखक सूरजपाल चौहान स्वयं गाँव –गाँव जाकर शिक्षा का महत्व लोगों को बताते थे। अभावग्रस्त बच्चों के लिए किताबें एवं फीस का भी प्रबंध करते थे। वे अभावग्रस्त बच्चों की समस्याओं को समझते थे क्योंकि वह दलित समाज से संबंध रखते थे उन समस्याओं को उन्होंने स्वयं भोगा था। जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करते हुए लेखक सूरजपाल चौहान हमारे बीच प्रतिष्ठित साहित्यकार बन कर उभरे।

संदर्भ सूची

[1]हैरी कब आएगा? - सूरजपाल चौहान, सम्यक प्रकाशन, 32/3, क्लबरोड़, पश्चिमपुरी चौक, नई दिल्ली - 63, द्वितीय
संस्करण – 2003 ई., पृ. 9
[2]वही, पृ. 19
[3]वही, पृ. 20
[4]वही, पृ. 20
[5]वही, पृ. 39
[6]वही, पृ. 43
[7]वही, पृ. 75
[8]वही, पृ. 76
[9]नया ब्राह्मण – सूरजपाल चौहान, वाणी प्रकाशन, 4695, 21 - ए, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002, अशोक राजपथ,
पटना (बिहार), प्रथम संस्करण – 2009 ई., पृ.62
[10]धोखा - सूरजपाल चौहान, वाणी प्रकाशन, 4695, 21 - ए, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002, प्रथम संस्करण – 2011 ई.,
पृ.61
[11]वही, पृ. 72
[12]वही, पृ. 72
[13]ब्रह्मराक्षस - सूरजपाल चौहान, वाणी प्रकाशन, 4695, 21 - ए, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002, अशोक राजपथ, पटना
(बिहार), प्रथम संस्करण – 2022 ई., पृ. 30